International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1391-1392

बृज की भौगोलिक संरचना और जनमानस

आरती वर्मा
MA, Ph.D., Department of History, Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना

बृज प्रदेश का सांस्कृतिक महत्व सदैव रहा है। अनेक धर्म समुदाय इस प्रदेश में पल्लवित हुए हैं। बृज ने सम्पूर्ण भारत ही नहीं विश्व को भी प्रभावित किया है। यहाँ की संस्कृति धर्म प्रधान रही है।

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति पर उसकी भौगोलिक संरचना का प्रभाव सदैव रहता है अत: बृज प्रदेश की इस संरचना ने यहाँ के निवासियों पर भी अपना प्रभाव ड़ाला है।

बृज प्रदेश को अनेक नामों से भी जाना जाता है जैसे – मथुरा, ब्रज, ब्रज मण्डल, मधुवन आदि। बृज प्रदेश सदा से ही एक इकाई के रुप में प्रसिद्ध रहा है। ब्रज के कुछ और भी नामों का उल्लेख हमें मिलता है जैसे –

1) ब्रह्मर्षि प्रदेश :- यह प्रदेश मथुरा शब्द की प्राचीनता को उजागर करता है।
2) मध्य प्रदेश :- इस नाम का होना यहाँ की भौगोलिक स्थिति का प्रमाण है।
3) ब्रज मण्डल, ब्रज जनपद :- ये नाम ब्रज के भू-भाग के उत्रोत्तर को दर्शाते हैं।
4) शूरसेन प्रदेश :- डॉ0 वाजपेयी का अनुमान है कि उक्त शूरसेन के नाम पर ही इस भू-भाग का नाम "शूरसेन प्रदेश" पड़ा।
5) मथुरा मण्डल :- रामायण, महाभारत व पुराणों में हमें मथुरा मण्डल का अधिक वर्णन मिलता है। ब्रज प्रदेश के कवियों व विद्वानों ने ब्रज प्रदेश के कई और रुप भी बतायें जैसे-

1) धार्मिक ब्रज	2) साम्प्रदायिक ब्रज
3) सांस्कृतिक ब्रज	4) आध्यात्मिक ब्रज
5) भाषायी ब्रज	6) राजनैतिक ब्रज

भौगोलिक दृष्टि के अन्तर्गत ब्रज प्रदेश को तीन भागों में बाँटा गया है।

1) मैदानी भाग
2) पथरीला किंवा पहाड़ी भाग
3) खादर भाग

ब्रज के मैदानी भाग में ही यमुना नदी बहती है। पथरीला भाग में हमें अनेक छोटी पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। इनकी उँचाई 100 फीट से भी कम है लेकिन इनका धार्मिक महत्व आज भी जनमानस के ह्दय को आन्नदित कर देता है साथ ही साथ आस्था को हमेशा बनाये रखता है। ब्रज का खादर का भाग यमुना की बाढ़ द्वारा आयी हुई मिट्टी का बना है।

"पद्य पुराण" (11-17) में हमें ब्रज प्रदेश के 12 वनों के नामों का भी वर्णन मिलता है जैसे –

1) मधुवन	2) तालवन	3) कुमुदम वन
4) महावन	5) लोहवन	6) कामवन
7) बेलवन	8) वृन्दावन	9) भांड़ीरवन
10) खदिर वन	11) बहुलावन	12) भद्रवन

कवि जगतनंद जी ने ब्रज प्रदेश की कुछ पहाड़ियों का भी वर्णन किया है जिनका अपना एक अलग महत्व है ये पाँच पहाड़ियाँ हैं –

1) गोवर्धन पहाड़ी
2) नंदगाँव की पहाड़ी
3) बरसाने की पहाड़ी
4) कामवन की पहाड़ी
5) चरण पहाड़ी

पहाड़ियों के साथ ही साथ ब्रज प्रदेश की भौगोलिक स्थिति को कुछ टीले भी प्रभावित करते हैं इन टीलों पर कई समाधियाँ भी बनी हुई हैं साथ ही साथ कुछ टीले ऐसे भी हैं जिन पर बस्तियाँ बसी हुई हैं लेकिन आज उन टीलों को बस्तियों के नाम से ही जाना जाता है जैसे –

1) गोकर्ण टीला	2) कंकाली टीला	3) महाविद्या टीला
4) ध्रुव टीला	5) नारद टीला	6) अवरीष टीला

बस्ती वाले टीले :- गायत्री टीला, चांमुडा टीला, गणेश टीला, हनुमान टीला, नाग टीला आदि।

नदियों में यमुना नदी का अपना एक विशेष महत्व है यह सबसे प्राचीन व पवित्र नदी है यह ब्रज मण्डल की एक मात्र गौरव शाली नदी है। इस नदी की महिमा इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह भगवान श्री कृष्ण के काल में ब्रज प्रदेश में प्रवाहित हो रही थी। यह ब्रज वासियों की माता कहलाती है। इसके अतिरिक्त ब्रज प्रदेश में सरोवर, बाबड़ी, घाट, कुंड आदि का अपना अलग ही महत्व है। ब्रज प्रदेश में दो प्रसिद्ध कुंड राधा कुंड व कृष्ण कुंड हैं जो अपनी आस्था का महत्व प्रत्येक व्यक्ति के ह्दय में बनाये रखे हुए है।

आर्थिक दृष्टी से ब्रज प्रदेश मैदानी व पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहाँ की भूमि अधिक उपजाऊ नहीं है। यहाँ कर आर्थिक महत्व धार्मिक स्थल होने के कारण पर्यटन व्यवसाय से भी जुड़ा हुआ है यहाँ के निवासी मुख्यत: इसी पर निर्भर हैं। यद्यपि कृषि की पैदावार व पशु पालन भी यहाँ के निवासियों के व्यवसाय के प्रमुख साधन हैं।

16 वीं0 - 17 वीं0 शदी के फारसी बृज में लिखी गयी दस्तावेजों की एक बड़ी संख्या है जिससे पता चलता है कि ब्रज के किसानों का सम्बंध पंच या मुकद्दम से साथ जो जमीन के टुकड़े को किराये पर उठाते व बेचते थे जिसका प्रयोग यहाँ के निवासी अपनी जीविका के लिए करते थे।

किसी भी प्रदेश की अर्थव्यवस्था अधिकांशत: उसकी भौगोलिक स्थिति पर भी निर्भर होती है।

ब्रज की अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत पशुपालन क्षेत्र में गाय को एक विशेष स्थान प्राप्त था वह पूज्यनीय होने के साथ ही साथ ब्रज वासियों की आर्थिक आय का भी मुख्य साधन था जो कि आज भी है।

ब्रज प्रदेश में मांगलिक परम्पराओं पर गोदांन करने का भी प्रचलन रहा है।

श्री कृष्ण के जन्म के समय इनके पिता नंद जी ने अनेकों सुन्दर - सुन्दर गायों को विविध प्रकार की धातुओं से सजाकर उन्हें ब्राहम्णों को दान कर दिया था। भगवान श्री कृष्ण गायों की सेवा के कारण ही गोपाल और गोविंद कहे जाते थे।

ब्रज के निवासी बहुत बड़ी संख्या में गायों को पालते हैं भगवान श्री कृष्ण के समय में गिरिराज पहाड़ी प्रमुख गौचरण का केन्द्र थी। ब्रज के निवासियों का आर्थिक जीवन गौ वंश पर ही आधारित था। वे इससे दूध, मक्खन जैसे पौष्टिक पदार्थों को प्राप्त करते थे व उसके गोबर और मूत्र से जो खाद निर्मित करते थे वह उनके खेत की उपज को बढ़ाने में काफी उपयोगी होता था।

गाय से उत्पन्न बछड़े हल खींचते थे व व्यापार सम्बंधित माल ढोने के काम भी आते थे।

इस प्रकार गाय ब्रज के प्रत्येक जनमानस के जीवन का आवश्यक अंग ही नहीं, उनके परिवार का प्रमुख सदस्य ही बन गयी थी।

कवि रसखान ने कहा है

> "मनुष्य हों तो वही रसखान, बसों मिल गोकुल गाँव के ग्वारन।
> जे पशु हों तो कहा बस मेगौ, चरौ नित नंद की धेन माँझारन 3 ॥
>
> रसखान रत्नावली, पृ0 65

गाय के विभिन्न रंगों का भी वर्णन कवियों ने बड़े उल्लास के साथ किया है – धौरी, धमरि, राती, पिथरी, गोरी, कजरी, भूरी, श्यामा, कपिला।

भौगोलिक स्थिति का प्रभाव बृज के जनमानस की सामाजिक स्थिति को भी भलीभाँति प्रभावित करता है। परम्परागत रुप से बृजवासी सानन्द जीवन व्यतीत करते हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली साथ रहने, कार्य करने, एक दूसरे का ध्यान रखने, छोटे-बड़ों के प्रति यथोचित सम्मान आदि यहाँ की सामाजिक व्यवस्था में परलक्षित होता है।

सत्य और संयम ब्रज लोक जीवन के प्रमुख अंग हैं। यहाँ के सिद्धांत की महत्ता है और जीवों में परमात्मा का अंश मानना ही दिव्य दृष्टि है।

परम्परागत रुप से धार्मिकता और सादगी बृज की जीवन - शैली का प्रमुख अंग है। यहाँ के निवासी मुख्य रुप से पुरुष श्वेत धोती कुर्ता, कंधे पर गमछा या शाल और सर पर पगड़ी तथा स्त्रियाँ लंहगा, चुनरी अथवा साड़ी ब्लाऊज सहित बच्चों को झंगा-झंगली, झबला आदि पहनावा यहाँ के निवासियों में समान रुप से दिखायी देता है।

पूजा अर्चना करने वाले व्यक्ति अधिकांशत: पैरों में खड़ाऊ अथवा कन्तान की जूती पहनते हैं। बृज के लोग हमेशा सादा भोजन ही पसंद करते हैं। त्यौहारों पर यहाँ विशेष पकवान बनाये जाते हैं।

बृज के निवासी प्रत्येक व्यक्ति के लिए सहानुभूति व प्रेम अर्पण करने के लिए तत्पर रहते है उनकी मिठास भरी वाणी में प्रेम की अमृत रुपी वर्षा स्वत: ही दिखायी देती है।

भौगोलिक दृष्टि से विवधता लिए हुए बृज प्रदेश अपने अन्दर अनेक ऐतिहासिक, सामाजिक व आर्थिक उतार-चढ़ाव को समेटे हुए है जिससे बृज के निवासी प्रभावित होते हुए भी बृज की गरिमा व वैभव को बनाये हुए है।

सन्दर्भ

1. डॉ0 प्रभुदयाल मित्तल : बृज की कलाओं का इतिहास, साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा दिल्ली, 1977।
2. श्री कृष्ण दत्त वाजपेयी : मथुरा, संग्रहाध्यक्ष, पुरातत्व संग्रहालय शिक्षा विभाग, उ0 प्र0 लखनऊ, 1955।
3. डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल : मथुरा कला पृ0 10।
4. श्री मदन मोहन नागर कृत : मथुरा का परिचय।
5. डॉ0 एस0 एल0 नागौरी : मुगल कालीन भारत, श्री सरस्वती प्रकाशन दिल्ली, 2002।
6. 6)राजेश पाण्डेय : भारत का सांस्कृतिक इतिहास उ0प0, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, 1976।
7. राजपाल सिहं : राइज ऑफ द जाट पावर, हर्मन पब्लिशिंग हाउस, 1988।
8. काशी प्रसाद जायसवाल।
9. मोतीलाल गुप्ता : ब्रज द सैन्ट्रम ऑफ इंडिया कलचर ,1928 अशोक विहार, फेस-1, देहली।
10. एफ0 एस0 ग्राउस : मथुरा-ए-डिस्ट्रिक्ट मेमोसर, एशियन ऐजुकेशनल सर्विसज, न्यू देहली, 1979।
11. इन्ट्रविस्टले ए0 डब्लू0 : ब्रज कल्चर ऑफ कृष्णा पिल्गरीमेग।